Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन

डॉ. निरुपमा शर्मा* श्रीमती माया सुथार**

* एसोसिएट प्रोफेसर, आरएमटीटीसी, उदयपुर (राज.) भारत
** शोधार्थी, शिक्षा विभाग, एमएलएसयू, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यह शोध उदयपुर जिले तक सीमित रखा गया है। उदयपुर जिले की घरेलू व कामकाजी माताओं के 400 बालको का चयन सोउद्देश्य विधि से किया गया। 400 बालकों मे से 200 बालक घरेलू माताओं के व 200 बालक कामकाजी माताओं के चयन किये गये। स्वनियमित अधिगम के मापन हेतु डॉ. मधु गुप्ता द्वारा निर्मित स्वनियमित अधिगम मापनी का प्रयोग किया गया। टी टेस्ट द्वारा परिकल्पना परीक्षण करने पर परिकल्पना अस्वीकृत हुई। घरेलू माताओं के बालकों व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम मे सार्थक अन्तर पाया गया। घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का स्तर औसत से कम तथा कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का स्तर औसत से अधिक पाया गया।घरेलू माताओं के बालकों का स्वनियमित अधिगम कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम की तुलना में निम्न पाया गया।

शब्द कुंजी – घरेलू माता, कामकाजी माता, स्वनियमित अधिगम।

प्रस्तावना – मनुष्य की प्रकृति में आदिकाल से ही सीखने की प्रवृत्ति रही है। आदिकाल से अब तक मनुष्य ने निरन्तर विकास किया हैं। इस विकास की प्रक्रिया में शिक्षा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक शिक्षित व्यक्ति के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग खुले हुए है क्योंकि शिक्षा ज्ञान प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से हमें सफल व्यक्ति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'शिक्षा जीवनपर्यनत चलने वाली प्रक्रिया है औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों से जीवन भर शिक्षा प्राप्त करता है। वह अपने दैनिक जीवन में अपने पर्यावरण के साथ अन्त: क्रिया करते हुए अनेक अनुभव प्राप्त करता है। इस अनुभवों से ज्ञान प्राप्त होता है वही व्यापक अर्थ मे शिक्षा है।'[1] शिक्षा सीखने का वह स्वरूप है जिसमें ज्ञान, कौशल और आदतों का एक पीढी से दूसरी पीढी में स्थानान्तरण होता है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो बालक के व्यक्तित्व का विकास कर सामाजिक प्रकिया के सुचारू संचालन मे योगदान देती है। प्लेटो के अनुसार 'शिक्षा द्वारा युवक उस उचित तर्क की ओर प्रेरित होते है, जो नियमानुमोदित है तथा जो वयोवृद्ध एवं उत्तम व्यक्तियों के अनुभवों द्वारा सच्चे अर्थ में समर्थित हैं।'[2]

हमें शिक्षित करने में हमारे परिवार, समाज एवं राष्ट्र का भी योगदान है। बालक जिस राष्ट्र में रहता है वहा की शिक्षा व्यवस्था उसे षिक्षित होनें के अवसर प्रदान करती है। पर परिवार एक ऐसी इकाई है जिसकी यह जिम्मेदारी होती है कि उन अवसरों से अपने बालकों को लाभान्वित करें। परिवार में बालक सभी सदस्यों से कुछ न कुछ सीखता है परन्तु बालक सबसे अधिक अपनी माता से सीखता है। बालक की प्रथम गुरू माता को माना गया है। माता का बालक के जीवन के सभी पहलुओं पर प्रभाव पडता है जैसे शारीरिक पक्ष, सामाजिक पक्ष, मानसिक पक्ष, भावात्मक पक्ष, क्रियात्मक पक्ष आदि। वर्तमान समय में माता के स्वरूप व कार्यो में बदलाव आया है, क्योकिं वर्तमान में मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ गई है। इसके फलस्वरूप महिलाएँ भी अर्थोपार्जन हेतु कार्य कर रही है। कुछ माताएँ घर से तो कुछ घर के बाहर जाकर अर्थोपार्जन कर रही है। अत:कार्य स्तर के आधार पर माताएँ घरेलू व कामकाजी माताएँ होती है। घरेलू व कामकाजी महिलाओं की दिनचर्या में अन्तर होता है। घरेलू महिलाएँ घर, परिवार व बच्चों को अपना पूरा समय देती है, परन्तु कामकाजी महिलाएँ घर, परिवार, बच्चों के साथ अपने कार्य–क्षेत्र में भी समय देती हैं। इससे उनके परिवार व बच्चों को मिलने वाले समय व अवधान में घरेलू महिलाओं की तुलना में अन्तर हो सकता है।

उद्देश्य :

1 घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन करना।
2 कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन करना।
3 घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम की तुलना करना।

परिकल्पना– घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

पारिभाषिक शब्दावली

घरेलू माता – कॉलिन डिक्शनरी के अनुसार 'घरेलू या गैरकर्यरत शब्द से तात्पर्य वेतन, फीस या मजदूरी के लिए नियोजित न होना; आय या उत्पादन का सृजन न करना।'[3] प्रस्तुत शोध मे घरेलू माताओं से तारत्पर्य उन माताओ से है जो केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करती है तथा आर्थिक सहायतार्थ कोई कार्य नही करती है।

कामकाजी माता:–वेब्स्टर कॉलेज डिक्शनरी के अनुसार' एक महिला जो आमतौर पर घर के बाहर नियमित रोजगाार के माध्यम से वेतन, मजदूरी या अन्य आय अर्जित करती है।'[4] प्रस्तुत शोध मे कामकाजी माताओं से तारत्पर्य उन माताओ से है जो विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर वेतन प्राप्त कर परिवार को आर्थिक सहयोग देती है।

गृह वातावरण – एम. एच. मेहता के अनुसार 'घरेलू वातावरण से तात्पर्य घर की भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक तथा भावात्मक स्थितियों से है, जो बालक के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करती है।'[5]

परिसीमन – प्रस्तुत शोध उदयपुर जिले की घरेलू व कामकाजी माताओं के माध्यमिक स्तर के बालको तक सीमित रखा गया है।

शोध विधि – शोध विधि शोध की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध में घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया गया है अत: शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श – शोध कार्य मे उदयपुर जिले के विद्यालयो का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। चयनित विद्यालयों से उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि से माध्यमिक स्तर के 200 घरेलू माताओं तथा 200 कामकाजी माताओं के बालकों का चयन किया गया।

उपकरण – प्रस्तुत शोध में स्वनियमित अधिगम के मापन हेतु डॉ. मधु गुप्ता द्वारा निर्मित स्वनियमित अधिगम मापनी (मानकीकृत उपकरण) का प्रयोग किया गया।

दत्त विश्लेषण

उद्देश्य 1 : घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन करना।

सारणी–1: घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन

क्षेत्र	N	मध्यमान	जेड़ स्कोर	ग्रेड	स्तर
आत्म जागरूकता	200	21–54	–0.683	E	औसत से कम
योजना एवं लक्ष्य निर्धारण	200	15–26	–0.679	E	औसत से कम
आत्मप्रेरणा	200	26–15	0.692	C	औसत से अधिक
आत्मनियन्त्रण	200	31–63	0.634	C	औसत से अधिक
आत्म मूल्यांकन	200	23–50	–0.602	E	औसत से कम
आत्म संशोधन	200	19–96	–0.725	E	औसत से कम
योग	200	138–03	–0.544	E	औसत से कम

घरेलू माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म जागरूकता' का मध्यमान 21.54 व जेड़ स्कोर –0.683 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (–1.25 ls –0.51= औसत से कम) के आधार पर घरेलू माताओं के बालकों की आत्म जागरूकता का स्तर औसत से कम पाया गया।

घरेलू माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम के** क्षेत्र 'योजना एवं लक्ष्य निर्धारण' का मध्यमान 15.26 व जेड़ स्कोर –0.679 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (–1.25 to –0.51= औसत से कम) के आधार पर घरेलू माताओं के बालकों की आत्म जागरूकता का स्तर औसत से कम पाया गया।

घरेलू माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम के** क्षेत्र 'आत्म प्रेरणा' का मध्यमान 26.15 व जेड़ स्कोर 0.692 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (+0.51 से +1.25 =औसत से अधिक) के आधार पर घरेलू माताओं के बालकों की आत्म प्रेरणा का स्तर औसत से अधिक पाया गया।

घरेलू माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म नियन्त्रण' का मध्यमान 31.63 व जेड़ स्कोर 0.634 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (+0.51 to +1.25 =औसत से अधिक) के आधार पर घरेलू माताओं के बालकों के आत्म नियन्त्रण का स्तर औसत से अधिक पाया गया।

घरेलू माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म मूल्यांकन' का मध्यमान 23.50 व जेड़ स्कोर –0.602 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (–1.25 to –0.51= औसत से कम) के आधार पर घरेलू माताओं के बालकों के आत्म मूल्यांकन का स्तर औसत से कम पाया गया।

घरेलू माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म संशोधन' का मध्यमान 19.96 व जेड़ स्कोर –0.725 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (–1.25 to –0.51= औसत से कम) के आधार पर घरेलू माताओं के बालकों के आत्म संशोधन का स्तर औसत से कम पाया गया।

घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगमका मध्यमान 138.03 व जेड़ स्कोर –0.544 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (–1.25 to –0.51= औसत से कम) के आधार पर घरेलू माताओं के बालकों का स्वनियमित अधिगम औसत से कम पाया गया।

उद्देश्य 2: कामकाजी माताओं के बालकों केस्वनियमित अधिगम का अध्ययन करना।

सारणी–2: कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन

क्षेत्र	N	मध्यमान	जेड़ स्कोर	ग्रेड	स्तर
आत्म जागरूकता	200	27–21	0.683	C	औसत से अधिक
योजना एवं लक्ष्य निर्धारण	200	19–52	0.679	C	औसत से अधिक
स्व प्रेरणा	200	20–54	–0.692	E	औसत से कम
स्व नियन्त्रण	200	26–11	–0.634	E	औसत से कम
स्व मूल्यांकन	200	27–95	0.602	C	औसत से अधिक
स्व संशोधन	200	25–69	0.725	C	औसत से अधिक
योग	200	147–01	0.544	C	औसत से अधिक

कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म जागरूकता' का मध्यमान 27.21 व जेड़ स्कोर 0.683 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (+0.51 to +1.25 =औसत से अधिक) के आधार पर कामकाजी माताओं के बालकों की आत्म जागरूकता का स्तर औसत से अधिक पाया गया।

कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम के** क्षेत्र 'योजना एवं लक्ष्य निर्धारण' का मध्यमान 19.52 व जेड़ स्कोर 0.679 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (+0.51 to +1.25 =औसत से अधिक) के आधार पर कामकाजी माताओं के बालकों के योजना एवं लक्ष्य निर्धारण का स्तर औसत से अधिक पाया गया।

कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म प्रेरणा' का मध्यमान 20.54 व जेड़ स्कोर –0.692 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (–1.25 to –0.51= औसत से कम) के आधार पर कामकाजी माताओं के बालकों की आत्म प्रेरणा का स्तर औसत से कम पाया गया।

कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म नियन्त्रण' का मध्यमान 26.11 व जेड़ स्कोर –0.634 प्राप्त हुआ। जेड़

स्कोर (-1.25 to -0.51=औसत से कम) के आधार पर कामकाजी माताओं के बालकों के आत्म नियन्त्रण का स्तर औसत से कम पाया गया।

कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'स्व मूल्याकंन' का मध्यमान 27.95 व जेड़ स्कोर 0.602 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (+0.51 to +1.25=औसत से अधिक) के आधार पर कामकाजी माताओं के बालकों के स्व मूल्याकंन का स्तर औसत से अधिक पाया गया।

कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म संशोधन' का मध्यमान 25.69 व जेड़ स्कोर 0.725 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (+0.51 to +1.25=औसत से अधिक) के आधार पर कामकाजी माताओं के बालकों के आत्म संशोधन का स्तर औसत से अधिक पाया गया।

कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का मध्यमान 147.01 व जेड़ स्कोर 0.544 प्राप्त हुआ। जेड़ स्कोर (+0.51 to +1.25= औसत से अधिक) के आधार पर कामकाजी माताओं के बालकों का स्वनियमित अधिगम औसत से अधिक पाया गया।

उद्देश्य 3- घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम की तुलना करना।

परिकल्पना

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी-3

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म जागरूकता' का मध्यमान क्रमश: 21.54 व 27.21 तथा माध्य विचलन 2.893 व 3.166 प्राप्त हुआ। मध्यमान अन्तर 5.670 तथा टी मान 18.697 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। (P=0.000:P<0.01) तात्पर्य है कि घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म जागरूकता' में सार्थक अन्तर है। मध्यमान अंकों को देखने पर यह स्पष्ट होता घरेलू माताओं के बालकों की आत्म जागरूकता कामकाजी माताओं के बालकों की तुलना में कम होती है।

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'योजना एवं लक्ष्य निर्धारण' का मध्यमान क्रमश:15.26 व 19.52 तथा माध्य विचलन 2.003 व 2.566 प्राप्त हुआ। मध्यमान अन्तर 4.255 व टी मान 18.487 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। (P=0.00:P,0.01) तात्पर्य है कि घरेलू एवं कामकाजी माताओं के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'योजना एवं लक्ष्य निर्धारण' में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमान अंकों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि घरेलू माताओं के बालकों की 'योजना एवं लक्ष्य निर्धारण' कामकाजी माताओं के बालकों की अपेक्षा अधिक होती है।

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म प्रेरणा' का मध्यमान क्रमश: 26.15 व 20.54 तथा माध्य विचलन 2.517 व 3.288 प्राप्त हुआ। मध्यमान अन्तर 5.610 तथा टी मान 19.159 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। (P=0.000:P<0.01) तात्पर्य है कि घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म प्रेरणा' में सार्थक अन्तर है। मध्यमान अंकों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि घरेलू माताओं के बालकों की आत्म प्रेरणा कामकाजी माताओं के बालकों तुलना में अधिक होती है। घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म नियन्त्रण' का मध्यमान क्रमश: 31.63 व 26.11तथा माध्य विचलन 3.408 व 3.335 प्राप्त हुआ। मध्यमान अन्तर 5.520 व टी मान 16.372 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।(P=0.00:P,0.01) तात्पर्य है कि घरेलू एवं कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म नियन्त्रण' में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमान अंकों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि घरेलू माताओं के बालकों का आत्म नियन्त्रण कामकाजी माताओं के बालकों की अपेक्षा अधिक होता है।

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म मूल्याकंन' का मध्यमान क्रमश: 23.50 व 27.95 तथा माध्य विचलन 2.579 व 3.280 प्राप्त हुआ। मध्यमान अन्तर 4.450 तथा टी मान 15.081 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। (P=0.000:P<0.01) तात्पर्य है कि घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म मूल्याकंन' में सार्थक अन्तर है। मध्यमान अंकों को देखने पर यह स्पष्ट होता घरेलू माताओं के बालकों का आत्म मूल्याकंन कामकाजी माताओं के बालकों तुलना में कम होता है।

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म संशोधन' का मध्यमान क्रमश: 19.96 व 25.69 तथा माध्य विचलन 2.470 व 2.958 प्राप्त हुआ। मध्यमान अन्तर 5.730 व टी मान 21.031 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।(P=0.00:P,0.01) तात्पर्य है कि घरेलू एवं कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** के क्षेत्र 'आत्म संशोधन' में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमान अंकों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि घरेलू माताओं के बालकों का आत्म संशोधन कामकाजी माताओं के बालकों की अपेक्षा कम होता है।

घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** का मध्यमान क्रमश: 138.03 व 147.01 तथा माध्य विचलन 6.44 व 7.384 प्राप्त हुआ। मध्यमान अन्तर 8.975 तथा टी मान 12.952 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। (P=0.000:P<0.01) तात्पर्य है कि घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के **स्वनियमित अधिगम** में सार्थक अन्तर है। इस आधार पर परिकल्पना **'घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम में सार्थक अन्तर नहीं होता है' अस्वीकृत होती है।** मध्यमान अंकों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि घरेलू माताओं के बालकों का **स्वनियमित अधिगम** कामकाजी माताओं के बालकों तुलना में कम होता है।

शोध निष्कर्ष

1 घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन करना।

घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम के क्षेत्र आत्म जागरूकता, योजना एवं लक्ष्य निर्धारण, आत्म मूल्याकंन और आत्म संशोधन का स्तर औसत से कम पाया गया। घरेलू माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम के क्षेत्र आत्म प्रेरणा और आत्म नियन्त्रण का स्तर औसत से अधिक पाया गया। समग्र रूप से घरेलू माताओं के बालकों का स्वनियमित अधिगम औसत से कम पाया गया।

2 कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम का अध्ययन करना।

कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम के क्षेत्र आत्म जागरूकता, योजना एवं लक्ष्य निर्धारण, स्व मूल्याकंन और आत्म संशोधन

का स्तर औसत से अधिक पाया गया और आत्म प्रेरणा व आत्म नियन्त्रण का स्तर औसत से कम पाया गया। समग्र रूप से कामकाजी माताओं के बालकों का स्वनियमित अधिगम औसत से अधिक पाया गया।

3 घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम की तुलना करना।

घरेलू माताओं के बालकों का स्वनियमित अधिगम का क्षेत्र आत्म जागरूकता, स्व मूल्याकंन और स्व संशोधन कामकाजी माताओं के बालकों की तुलना में निम्न पाया गया। घरेलू माताओं के बालकों का स्वनियमित अधिगम का क्षेत्र सुरक्षा, स्व प्रेरणा और स्व नियन्त्रण कामकाजी माताओं की अपेक्षा उच्च पाया गया। घरेलू माताओं के बालकों का **स्वनियमित अधिगम** कामकाजी माताओं के बालकों तुलना में निम्न होता है।

शैक्षिक निहितार्थ व सुझाव – विद्यार्थियों की दृष्टि से यह शोध उनकी सीखने की प्रक्रियाओं, व्यावहारिक अनुशासन और आत्म नियन्त्रण को समझने मे सहायक सिद्ध होगा। माता की भूमिका बालक के मानसिक विकास एवं शैक्षिक विकास पर गहरा प्रभाव डालती है। माता का कामकाजी होना या घरेलू होना दोनो ही स्थितियाँ बालकों के लिए भिन्न –भिन्न अधिगम परिस्थितियाँ निर्मित करती है। यह अध्ययन बालकों की सीखने की प्रवृत्तियों, आत्म अनुशासन और आत्म निर्भरता के निर्माण की प्रक्रिया को गहराई से समझने मे मदद करता है। बालकों मे उत्तरदायित्व, समय प्रबन्धन, आत्म प्रेरणा, निर्णय लेने जैसे गुण पारिवारिक वातावरण से ही विकसित होते है। यह शोध बालको के लिए अपनी माताओं के कार्य–स्तर व निवास क्षेत्र के साथ अपने अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने मे सहायक होगा। शोध से प्राप्त तथ्यों की जानकारी होने से एक अध्यापक बालक की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान मे रख सकते हैं। यह शोध घर के वातावरण में माता की उपस्थिति या अनुपस्थिति मे बालको के नियन्त्रण सुरक्षा दण्ड, सामाजिक एकान्तता, सीखने की आदतों, आत्म अनुशासन आदि की व्याख्या करता है। भविष्य में यह अनुसंधान अन्य जिले के बालकों पर किया जा सकता है। यह शोध सामान्य व आरक्षित वर्ग के बालकों पर भी किया जा सकता है। माताओं के कार्य स्तर का **स्वनियमित अधिगम** पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है। भविष्य मे यह शोध सरकारी व निजी विद्यालयों के बालकों व बालिकाओं पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. सिंह, रामपाल (2012/293), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, पृ.सं.30
2. शर्मा,आर.ए.(2015):'शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया', आर.लाल बुक डिपो,पृ.सं. 3
3. www.collinsdictionary.com/dictionary/english/nonworkingwoman#:-text=adjective
4. www.collinsdictionary.com/dictionary/english/workingwoman#google_vignettee
5. मेहता, मधु एवं मेहता डिम्पल.,(2013) गृह वातावरण अनुसूची, नेशनल साइकोलोजी कारपोरेशन, आगरा
6. कपिल,एच.के.,सांख्यिकी के मूल तत्व, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा
7. गैरेट, हेनरी ई.,(1995)शिक्षा और मनोविज्ञान सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना
8. www.researchgate.net

सारणी–3: घरेलू व कामकाजी माताओं के बालकों के स्वनियमित अधिगम की तुलना

स्वनियमित अधिगम		N	Mean	Std. Deviation	Mean Difference	't' score	p value
आत्म जागरूकता	घरेलू	200	21.54	2.893	5.670	18.697	0.000
	कामकाजी	200	27.21	3.166			
योजना एवं लक्ष्य निर्धारण	घरेलू	200	15.26	2.003	4.255	18.487	0.000
	कामकाजी	200	19.52	2.566			
आत्म प्रेरणा	घरेलू	200	26.15	2.517	5.610	19.159	0.000
	कामकाजी	200	20.54	3.288			
आत्म नियन्त्रण	घरेलू	200	31.63	3.408	5.520	16.372	0.000
	कामकाजी	200	26.11	3.335			
आत्म मूल्याकंन	घरेलू	200	23.50	2.579	4.450	15.081	0.000
	कामकाजी	200	27.95	3.280			
आत्म संशोधन	घरेलू	200	19.96	2.470	5.730	21.031	0.000
	कामकाजी	200	25.69	2.958			
योग	घरेलू	200	138.03	6.443	8.975	12.952	0.000
	कामकाजी	200	147.01	7.384			

****